महानगर की भागती जिंदगी में ठहर कर किसी दृश्य पर नजर टिकाने की फुर्सत किसे है । तथापि सुबह - सुबह रंग - बिरंगी पोशाकों में सजे स्कूल जाते बच्चों के झुंड सहसा ध्यान खींच लेते हैं । यह कविता बड़ी होती इन उम्मीदों का एक चित्र है ।

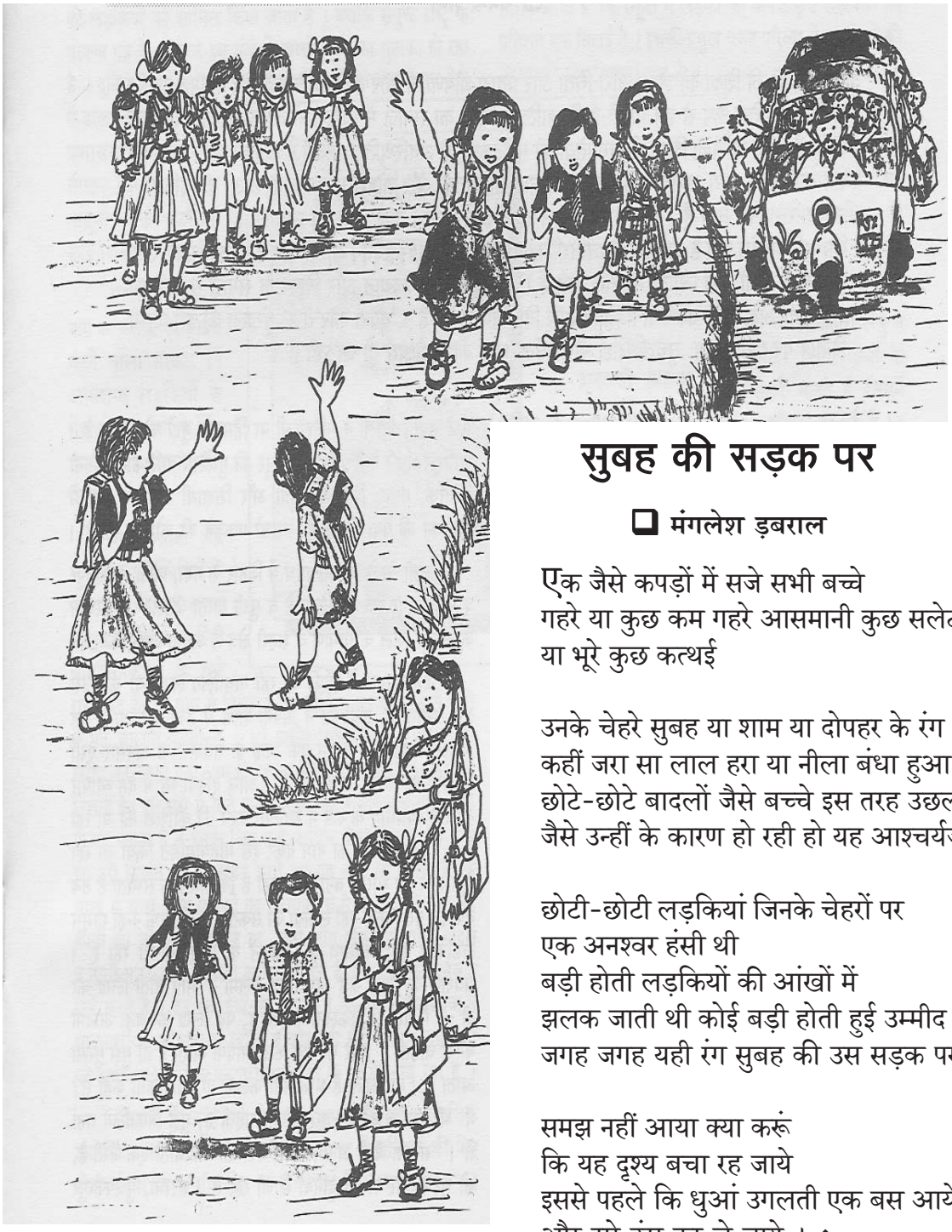

सुबह की सड़क पर

❑ **मंगलेश डबराल**

एक जैसे कपड़ों में सजे सभी बच्चे
गहरे या कुछ कम गहरे आसमानी कुछ सलेटी
या भूरे कुछ कत्थई

उनके चेहरे सुबह या शाम या दोपहर के रंग के
कहीं जरा सा लाल हरा या नीला बंधा हुआ
छोटे-छोटे बादलों जैसे बच्चे इस तरह उछलते हुए आये
जैसे उन्हीं के कारण हो रही हो यह आश्चर्यजनक सुबह

छोटी-छोटी लड़कियां जिनके चेहरों पर
एक अनश्वर हंसी थी
बड़ी होती लड़कियों की आंखों में
झलक जाती थी कोई बड़ी होती हुई उम्मीद
जगह जगह यही रंग सुबह की उस सड़क पर

समझ नहीं आया क्या करूं
कि यह दृश्य बचा रह जाये
इससे पहले कि धुआं उगलती एक बस आये
और इसे ठूंस कर ले जाये । ◆